ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्। अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।

Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 37, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 दिसम्बर, 2013 से रविवार 5 जनवरी, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रेरित आर्य नेता आचार्य रामदेव जी द्वारा स्थापित

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का 90वां वार्षिकोत्सव उत्साह पूर्वक सम्पन्न

दिल्ली, हरियाणा के आर्यजनों सहित सैंकड़ो महानुभावों ने शीत के बावजूद उत्साहपूर्वक भाग लिया

गुरुकुल की वर्तमान अवस्था को देखकर मन दुःखी है परमात्मा के आशीर्वाद से सुधार करने का हर प्रयास करेंगे
– महाशय धर्मपाल (प्रधान, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी)

90 वर्ष पुराने गुरुकुल के गौरवमयी इतिहास को लौटाने के लिए आर्यजनों को कमर कसनी होगी
– डॉ. राम प्रकाश (कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)

प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ 'गुरुकुल' जहां सबको चाहे कोई राजा, साहूकार या निर्धन दरिद्र की सन्तान हो बिना किसी भेद-भाव के तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन एवं एक समान शिक्षा प्राप्त हो, फिर चाहे वह बालक हो या बालिका। शिक्षा भी ऐसी जिसमें उत्तम संस्कारों का समावेश हो, धर्म-कर्म एवं राजनीति का समावेश हो, परोपकार की भावना हो, मानव मात्र को कुटुम्ब समझते हुए समाज कल्याण की भावना हो, वसुधैव कुटुम्बकम हो।

11 लाख रुपये की लागत से लाला दीपचन्द आर्य की स्मृति में गौशाला के निर्माण की घोषणा

एक करोड़ रुपये की लागत से महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. विद्यालय व छात्रावास के निर्माण की घोषणा से गुरुकुल में होगा

कुछ ऐसे विचारों से प्रेरित महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भारत भर में स्थान-स्थान पर पाठशालाओं एवं आर्य समाज श्रेष्ठ लोगों का समाज की स्थापना की। इन्हीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनमोल ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का अक्षरशः पालन करते हुए अनन्य शिष्य महात्मा मुंशीराम ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। किन्तु एक दिन जब उन्होंने अपनी ही पुत्री के मुख से सुना -ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया - ईसा मेरा राम रमैया। तब उन्हों ने कन्याओं के लिए भी गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी (महात्मा मुंशीराम) जी के से प्रेरित एवं उन्हीं के गुरुकुल के स्नातक आचार्य रामदेव जी ने देहरादून में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। हांलांकि इससे तीन वर्ष पूर्व वर्ष 8 नवम्बर 1923 में दिल्ली में इसकी स्थापना हो चुकी

गुरुकुल के आर्थिक घाटे को पूर्ण करने हेतु आर्यजनों ने उत्साहपूर्वक योगदान देने का संकल्प लिया

कन्या गुरुकुल में होगा 60 वर्ष पश्चात् कोई निर्माण कार्य
–आचार्य यशपाल, मुख्याधिष्ठाता

– शेष चित्रमय झांकी एवं समाचार पृष्ठ 4 पर

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में पहली बार पधारने पर महाशय धर्मपाल जी का तिलक लगाकर स्वागत करती गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां।

आर्य विद्यालय सभा गुरुकुल कांगड़ी द्वारा संचालित कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के 90वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ करते डॉ. रामप्रकाश जी, ब्र. राजसिंह आर्य जी महाशय धर्मपाल जी एवं आचार्य विजयपाल जी तथा सम्बोधित करते कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी।

वेद-स्वाध्याय

चारों वेदों की उत्पत्ति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।। ऋग्वेद 10/90/9

अर्थ—*(सर्वहुतः)* प्रलय में सब जगत् को अपने में लीन करने और *(तस्मात् यज्ञात्)* सृष्टि उत्पत्ति के समय सारे जगत् की संगति करने वाले परमेश्वर से *(ऋचः)* ऋचायें, *(सामानि)* साम के मन्त्र *(जज्ञिरे)* उत्पन्न हुये हैं। *(तस्मात् छन्दांसि जज्ञिरे)* उसी से अथर्ववेद के मन्त्र उत्पन्न हुये और *(यजुस्तस्मादजायत)* यजुर्वेद के मन्त्र भी उसी से उत्पन्न हुये।

ज्ञान दो प्रकार का होता है—स्वाभाविक और नैमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान वह होता है जो जन्म से ही प्राप्त हुआ हो। जैसे सद्य प्रसूत गाय के बछड़े को यदि नदी या तालाब में छोड़ दिया जाये तो वह तैरकर उससे बाहर निकल जाता है। नैमित्तिक ज्ञान उसे कहते हैं जो बिना सिखाये नहीं आये। उदाहरणस्वरूप मनुष्य के बच्चे को जब तक तैरना नहीं सिखाया जायेगा तब तक सारी आयु वह तैरने में सफल नहीं होता। मनुष्यों में स्वाभाविक ज्ञान की अपेक्षा नैमित्तिक ज्ञान को प्राप्त करने के लिये ही परमात्मा ने बुद्धि प्रदान की है और उसी की सहायता से आज मानव चकित कर देने वाले कार्य कर रहा है।

भाषा एक ऐसा विषय है जो बिना सिखाये नहीं आता। हमने अपनी माता से बोलना सीखा है। हमारी माता ने अपनी माता से और यह परम्परा तब समाप्त होती है तब मानव सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुआ तब उसे बोलना किसने सिखाया क्योंकि आदि सृष्टि अमैथुनी उत्पन्न हुई।

जो यह मानते हैं कि मनुष्यों ने पशुओं और पक्षियों की बोली सुनकर उनके नाम निर्धारित किये जैसे कांव-कांव करने से 'काक' नाम प्रसिद्ध हुआ। ऐसे ही विभिन्न वस्तुओं एवं कार्यों के संकेत निर्धारित कर भाषा बना ली, यह बात भी गले नहीं उतरती। जब कोई भाषा ही नहीं थी तो संकेत किस प्रकार निर्धारित किये गये। इससे सिद्ध हुआ कि भाषा को सृष्टि के आदि में सिखाने वाला और व्यावहारिक ज्ञान देने वाला परमात्मा ही हो सकता है दूसरा नहीं।

वेदमन्त्र कह रहा है **तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे** उस परमात्मा से ही ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुये **छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्मादजायत** अथर्ववेद और यजुर्वेद भी उसी से उत्पन्न हुये हैं।

इन चारों वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में उत्पन्न हुआ। सभी मनुष्यों में वे चार ही सर्वश्रेष्ठ थे। अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु को यजुर्वेद, आदित्य को सामवेद और अथर्वा=अङ्गिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान हुआ। सर्वशक्तिमान् परमात्मा ने उनको जनाया। बिना मुख से बोले सीधा ही यह ज्ञान दिया गया और उन्हें बोलना भी सिखाया। इन चारों ऋषियों से एक ऋषि ब्रह्मा ने वेद पढ़े और ब्रह्मा से मरीचि, कश्यप आदि ने। इस प्रकार यह परम्परा अब तक चली आ रही है। परमात्मा से सुने जाने और फिर एक से सुन दूसरे को कण्ठस्थ होने से इनका नाम 'श्रुति' प्रसिद्ध हुआ। कुछ लोग प्रश्न करते हैं बिना मुख के निराकार ईश्वर से शब्द-रूप वेद कैसे प्रकट हुये। इसका उत्तर यह है कि जब बिना हाथ-पैर के उसने सृष्टि की रचना की है तो अपने अनन्त सामर्थ्य से वह वेदों का ज्ञान बिना मुख के सीधा ही दे सकता है। जैसे मन में मुखादि के बिना भी प्रश्नोत्तर होते रहते हैं वैसे ही परमात्मा में भी जानना चाहिये।

दूसरा प्रश्नकर्त्ता कहता है कि ईश्वर को वेदों का उपदेश देने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मनुष्य लोग क्रमशः ज्ञान का विकास करते हुये पुस्तक भी बना लेंगे। जैसे आज विज्ञान की जो उन्नति हुई है वह सब मनुष्यों की बुद्धि का ही कौशल है।

उत्तर—यह बात सर्वांश में सही नहीं है। जैसे जंगल में रहने वाले मनुष्य स्वयं विद्वान् नहीं हो जाते। किसी से पढ़े बिना कोई विद्वान् नहीं होता देखा गया और क्रियात्मक प्रशिक्षण के बिना किसी को भी किसी कार्य को करने का ज्ञान नहीं होता। यह तो सम्भव है कि पढ़ने लिखने और सीखने के पश्चात् मनुष्य अपनी बुद्धि का और भी अधिक विकास कर नवीन ज्ञान को प्राप्त कर ले परन्तु उस ज्ञान वा कला-कौशल को सिखाने वाला पहले कोई होना ही चाहिये।

प्रश्नकर्त्ता पुनः पूछता है—'अच्छा बताओ, वेदों को उत्पन्न करने में ईश्वर का क्या प्रयोजन था?'

उत्तर—ईश्वर पूर्ण ज्ञानी होने से उसमें अनन्त विद्या है। विद्या अपने और दूसरों के लिये होती है। ईश्वर में सृष्टि-रचना करने, उत्पत्ति के पश्चात् उसकी स्थिति और प्रलय करने का पूर्ण-ज्ञान और सामर्थ्य है। इसके अतिरिक्त सब जीवों को कर्मानुसार विभिन्न योनियों में जन्म देने का भी ज्ञान है। ईश्वर परोपकारी है इसलिये सृष्टि की रचना कर उसने इन पदार्थों से किस प्रकार उपयोग लिया और किन कर्मों से सुख और किन से दुःख की प्राप्ति होती है, इत्यादि सभी ज्ञान-विज्ञान वेदों के द्वारा मानव मात्र के लिये ऋषियों को दिया जिससे सभी मनुष्य उत्तम कर्म कर भोग और अपवर्ग दोनों की प्राप्ति कर सकें।

प्रश्न—वेदों में कौन-कौन से विषय हैं?

उत्तर—वैसे तो अङ्गभूत विषय अनेक है। वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है परन्तु ऋग्वेद में प्रकृति से लेकर परमेश्वर तक सभी के गुण-कर्म-स्वभाव विस्तार से बताये हैं। यजुर्वेद में उन-उन पदार्थों से कैसे कार्य लिया जाये और वर्ण-आश्रम, राजा-प्रजा आदि परस्पर कैसे व्यवहार करें इसको बतलाया है। सामवेद उपासना और अथर्ववेद विज्ञान का वेद है। वेद सृष्टि का आदि-संविधान है। यह उच्चकोटि की आचार-संहिता और धर्म का मूल है।

प्रश्न—सृष्टि का प्रलय हो जाने पर क्या वेद भी नष्ट हो जायेंगे?

उत्तर—जो पुस्तक रूप वेद के ग्रन्थ हैं उन्हीं का विनाश होगा। परन्तु वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से उसके ज्ञान में नित्य बने रहते हैं। जब पुनः सृष्टि की उत्पत्ति होती है तो परमात्मा उनका ज्ञान पूर्ववत् देता है। यह क्रम अनादिकाल से चलता आ रहा है। जितना समय मानव की उत्पत्ति का है उतना ही वेदोत्पत्ति का जानना चाहिये।

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

केदारघाटी में आई भयंकर बाढ़ से प्रभावित पीड़ितों की सहायतार्थ आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड को प्राप्त दान राशि

1. श्री महेश चन्द आर्य, वेद प्रचार मंडल, मौ. चौराहा गली, मुरादाबाद (उ.प्र.)	37000
2. डॉ. ओमप्रकाश वेदर्थी, आर्यसमाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद (उ.प्र.)	40000
3. श्री दिवाकर शास्त्री, आर्यसमाज स्टेशन रोड, मुरादाबाद (उ.प्र.)	25000
4. मन्त्री, आर्यसमाज रैणावरी, घाट जोगीलंकर, श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर)	4000
5. आर्यसमाज सान्ताक्रुज, वी. पी. मार्ग, सान्ताक्रुज, मुम्बई	300000
6. श्री रामदेव आर्य, प्रबन्धक, दयानन्द इंटर कॉलेज, टनकपुर (उत्तराखण्ड)	3200
7. श्री भारत भूषण आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर	51000

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। *- महामन्त्री*

खेद व्यक्त : 1. आर्य सन्देश के अंक 16 से 22 दिसम्बर, 2013 में पृष्ठ 4 पर 'मैंगलोर पुस्तक मेला' की सूचना प्रकाशित की गई है। खेद है कि समय कम होने के कारण सभा इस पुस्तक मेले में भागीदारी नहीं कर रही है। वहां सभा की ओर से साहित्य प्रचार स्टाल नहीं लगाया जाएगा। 2. खेद है कि आर्य सन्देश के गत अंक दिनांक 23 दिसम्बर से 29 दिसम्बर, 2013 प्रैस गड़बड़ी होने के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - सम्पादक

पीड़ित निराश्रित बच्चों हेतु बनने वाले विद्यालय एवं छात्रावास के लिए बढ़-चढ़कर सहयोग करें

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

सामयिक लेख

कैसा हो नव वर्ष हमारा

- विनोद बंसल

अभी हाल ही में एक खबर आई कि क्रिसमस व नए साल के जश्न में सराबोर कुछ युवक गाजियाबाद की सड़कों पर हुडदंग करते हुए पकड़े गए। बताया गया कि पकड़े गए सभी युवक अच्छे घरों से सम्बन्ध रखते हैं। बारहवीं कक्षा से लेकर एम.बी.ए. डिग्रीधारी 22 से 25 वर्ष के ये छात्र शराब के नशे में धुत्त होकर सड़क पर बेहद खतरनाक स्टंटबाजी कर राहगीरों की जान को तो जोखिम में डाल ही रहे थे साथ ही तेज आवाज में संगीत बजाकर युवतियों पर फब्तियां भी कस रहे थे। अंग्रेजी कलेंडर के प्रथम दिवस यानि एक जनवरी के आने के एक सप्ताह पहले ही क्रिसमस व नए साल के आगमन की तैयारियों का जोश चारों ओर नजर आने लगता है। इस जोश में अधिकतर लोग अपना होश भी खो बैठते हैं। करोड़ों रुपए नव वर्ष की तैयारियों में लगा दिए जाते हैं। होटल, रेस्तरां, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। 'हैप्पी न्यू ईयर' के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डों के साथ दारु की दुकानों की भी खूब चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि मनुष्य-मनुष्यों से तथा गाड़ियां-गाड़ियों से भिड़ने लगती हैं और घटनाऐं दुर्घटनाओं में बदलने में देर नहीं लगती। रात-रातभर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियां एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलान्जलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया। क्या यही है हमारी संस्कृति या त्योहार मनाने की परम्परा।

जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु भारतीय काल गणना के प्रमुख स्तंभ "विक्रमी सम्वत्" का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नहीं, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के 27वें व 30वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः 45 व 15 में विस्तार से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और उनके सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद, चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं। और तो और, देश के बडे से बडे राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचांग पर आधारित होता है न कि अंग्रेजी कलेण्डर पर। भारतीय मान्यतानुसार कोई भी काम यदि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जाये तो उसकी सफलता में चार चांद लग जाते हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एक सही दिशा प्रदान करते हैं उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। यह सामान्यतया अंग्रेजी कलेण्डर के मार्च या अप्रैल माह में पड़ता है। इसके अलावा जापान, फ्रांस, थाईलैण्ड, इत्यादि अनेक देशों के नव वर्ष भी इसी दौरान पड़ते हैं। इनके अलावा चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारंभ की। भगवान श्री राम, चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य व धर्म राज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था। शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है। आर्य समाज स्थापना दिवस, सिख परंपरा के द्वितीय गुरू अंगददेव, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ0 केशव राव बलीराम हैडगेवार का जन्म भी वर्ष प्रतिपदा के दिन ही हुआ था।

यदि हम इस दिन के प्राकृतिक महत्त्व की बात करें तो वसंत ऋतु का आरंभ वर्ष-प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है। फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये शुभ मुहूर्त होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके? मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही नतीजा है कि आज हमने न सिर्फ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व महसूस किया बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में "इंडिया दैट इज भारत" तक रख दिया। इसके पीछे यही धारणा थी कि भारत को भूल कर इंडिया को याद रखो क्योंकि यदि भारत को याद रखोगे तो भरत याद आएंगे, शकुन्तला व दुष्यन्त याद आएंगे, हस्तिनापुर व उसकी प्राचीन सभ्यता और परम्परा याद आएगी।

राष्ट्रीय चेतना के ऋषि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहने वाला अपना आत्म गौरव खो बैठता है"।

इसी प्रकार महात्मा गांधी ने 1944 की हरिजन पत्रिका में लिखा था "स्वराज्य का अर्थ है स्व-संस्कृति, स्वधर्म एवं स्व-परम्पराओं का हृदय से निर्वाह करना। पराया धन और पराई परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान।"

आवश्यक है कि हम अपने नव वर्ष का उल्लास के साथ स्वागत करें न कि अर्ध रात्रि तक मद्यपान कर हंगामा करते हुए, नाइट क्लबों में अपना जीवन गुजारें। यदि इस तरह का जीवन जीते हुए हम लोग उन्मत्त होकर अपने ही स्वास्थ्य, धन-बल और आयु का विनाश करते हुए नव वर्ष के स्वागत का उपक्रम करेंगे, तो यह न केवल स्वयं के लिए बल्कि, अपनी भावी पीढ़ी के लिए भी घातक होगा।

नया वर्ष सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है। नववर्ष के ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर में सुगंधित वातावरण कर दिया जाता है। घर को भगवा ध्वज, पताका और तोरण से सजाया जाता है। कहा गया है कि जो लोग उदीप्यमान सूर्य को अर्घ देते हुए प्रार्थना करते हैं, जो सूर्योदय की पावन वेला में अग्नि में आहूति देकर यज्ञ करते हैं अर्थात जो सूर्य की उपासना करके पुरुषार्थ का आरम्भ करते हैं, वे जीवन में समृद्धि के उपभोक्ता होते हैं। सूर्य आराधना, पितृ आराधना और देव आराधना के बाद अपने माता-पिता, संतों, आचार्यों व बड़ों को प्रणाम करना चाहिए। इसके उपरान्त ब्राह्मण, कन्या, गाय, कौआ और कुत्ते को भोजन कराए जाने की परिपाटी भी है। फिर सभी एक-दूसरे को नववर्ष की बधाई देते हैं, एक दूसरे को तिलक लगाते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं। नए शुभ संकल्प भी लिए जाते हैं।

हम नववर्ष के दिन कुछ ऐसे कार्य कर सकते हैं, जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे हम गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करने, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने, वृक्षारोपण करने, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने, शिक्षा का प्रसार करने तथा सामाजिक कुरीतियां दूर करने जैसे कार्यों के लिए संकल्प ले सकते हैं और पहल कर सकते हैं।

आइये! विदेशी दासत्व को त्याग स्वदेशी अपनाऐं और गर्व के साथ भारतीय नव वर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनायें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

- 329, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-110065

Vinodbansal01@gmail.com

......राष्ट्र के स्वाभिमान व देश प्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुडे हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नव वर्ष प्रारम्भ होता है। यह सामान्यतया अंग्रेजी कलेण्डर के मार्च या अप्रैल माह में पड़ता है। ..... भगवान श्री राम, चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य व धर्म राज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।..... आर्य समाज स्थापना दिवस, सिख परंपरा के द्वितीय गुरू अंगददेव, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डा0 केशव राव बलीराम हैडगेवार का जन्म भी वर्ष प्रतिपदा के दिन ही हुआ था।....

.... क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग सके? मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का ही नतीजा है कि आज हमने न सिर्फ अंग्रेजी बोलने में हिन्दी से ज्यादा गर्व महसूस किया बल्कि अपने प्यारे भारत का नाम संविधान में "इंडिया दैट इज भारत" तक रख दिया।.......

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

लम्बे समय से कन्या गुरुकुल की भूमि पर इस प्रकार के भव्य आयोजन का इंतजार रहा - डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति

दिल्ली की आर्यसमाजें अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए तत्पर हैं - राजसिंह आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

इस भव्य आयोजन को देखकर गुरुकुल परिवार में उत्साह की लहर - डॉ. सविता आनन्द, प्रधानाचार्या

प्रथम पृष्ठ का शेष

थी, वर्ष 1927 में इसे देहरादून में स्थानांतरित किया गया। तभी से यह कन्या गुरुकुल यहां पल्लवित-पुष्पित हो रहा है। इस गुरुकुल ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं। प्रथम कक्षा से विद्यालंकार तक शिक्षा यहां प्रदान की जाती है। यह महाविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के अन्तर्गत ही है। गुरुकुल की प्रथम आचार्या विद्यावती सेठ ने अपना सम्पूर्ण यौवन इसके निर्माण में लगा दिया। वर्ष 1953 से 2010 तक आचार्या रामदेव जी की सुपत्री श्रीमती दमयन्ती कपूर ने इसके आचार्य पद के कार्यभार को संभाला तथा वर्तमान उन्नत अवस्था तक पहुंचाया। वर्तमान में आचार्य रामदेव जी की दोहित्री (आचार्या दम्यन्ती कपूर की सुपुत्री) श्रीमती सविता आनन्द जी इस गुरुकुल की आचार्या हैं। इस कालान्तर में गुरुकुल का स्वर्णिम काल धूमिल सा पड़ने लगा।

आज 90 वर्ष बाद पुनः आर्यजनों का काफिला देहरादून की ओर अग्रसर होने लगा। अवसर था आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून का 90वां वार्षिकोत्सव। दिल्ली से चार बसें, हरियाणा से चार बसें तथा बीसियों निजी वाहनों में सैंकड़ों की की संख्या में आर्यजन वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए पहुंचे। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से बसों की व्यवस्था की गई थी तीन दिनो का कार्यक्रम बनाया गया 22 को देहरादून गुरुकुल का 90वां वार्षिकोत्सव एवं 23 को हरिद्वार में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह।

सर्दी का मौसम, शीत लहर और ऊपर से बरसात किन्तु आर्यजनों का उत्साह कम नहीं हुआ। कार्यक्रम को खुले मैदान के स्थान पर हॉल में करना पड़ा।

कार्यक्रम का प्रारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञोपरान्त गुरुकुल की कन्याओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई जिसमें वैदिक वन्दना, वैदिक मन्त्रों पर नृत्य, नारी शक्ति की महिमा को प्रस्तुत करने वाले सांकेतिक गान, संस्कृत नाटक तथा मारवाड़ी नृत्य किए गए।

समस्त कार्यक्रम का संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने किया। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में प्रथम बार पधारने पर आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के नव नियुक्त प्रधान महाशय धर्मपाल जी एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति वैदिक विद्वान् डॉ. रामप्रकाश जी को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आखिर डेढ़ करोड़ के घाटे में क्यों और कैसे पहुंचा कन्या गुरुकुल : जांच की मांग

मंच संचालन करते हुए श्री विनय आर्य जी ने गुरुकुल के इतिहास एवं वर्तमान स्थिति को आर्यजनों को सम्मुख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल वर्तमान में आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है। उन्होंने उपस्थित महानुभावों से दिलखोलकर इस हेतु दान देने की अपील की। उनकी इस अपील पर

- शेष पृष्ठ 6 पर

श्रीमती वीणा एवं श्री धर्मपाल आर्य जी को आशीर्वाद देते महाशय जी

सम्बोधित करते आचार्य विजयपाल जी, आचार्य यशपाल जी व श्री विनय आर्य जी

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में प्रथम बार पधारने पर सम्मान पत्र देकर सम्मानित करते डॉ. रामप्रकाश जी एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी साथ में हैं ब्र. राजसिंह आर्य जी। इसी अवसर पर डॉ. रामप्रकाश जी को भी कुलाधिपति बनने के बाद पहली बार गुरुकुल पधारने पर प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित करते कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी साथ में सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी

90वें वार्षिकोत्सव पर उपस्थित आर्यजनों के समक्ष विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन करती गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां।

श्री सत्यसनातन वेद मन्दिर समिति द्वारा सेवा कार्य सम्पन्न

श्री सत्यसनातन वेद मन्दिर समिति रोहिणी, सैक्टर 8, दिल्ली-85 जिसका उद्देश्य सेवा-संस्कृति-साधना है। इस हेतु इन दिनों सर्दियों में 24.11.13 को **जंहागीरपुरी** के झुग्गी-झोपड़ियों के कुछ विधवाओं, अन्धों व बुजुर्गों को कम्बल वितरण का कार्य किया जिससे सर्दियों से कुछ राहत मिल सके। यह आयोजन आर्य समाज मन्दिर श्री साधु बिशन हाल-आई ब्लॉक 1486-87 जहांगीर पुरी दिल्ली-110033 में किया गया।

इस अवसर उन्हें कुछ नैतिक शिक्षा भी दी तथा शराब व नशों आदि से बचने के प्रेरणा भी दी जिससे व्यसनों से बचकर जीवन को सुपथ पर चला सके। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान दिनेश चन्द्रशर्मा जी, अरविन्द आर्य, मन्त्री श्री रामभरोस जी

कोषाध्यक्ष राज बहादुर जी, श्री प्रकाश चन्द्र आर्य जी तथा अनेक लोगों ने भाग लिया।

श्री सत्यसनातन वेद मन्दिर समिति के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी ने अपने प्रवचन के माध्यम से सुविचार दिये। कोषाध्यक्ष कु. केचन आर्य जी भी उपस्थित रहीं। सेवा संस्कृति साधन के रूप में आर्य **गुरुकुल तिहाड़ गांव** में जहाँ आसाम, नागालैण्ड, मिजोरम आदि वनवासी क्षेत्र के बच्चों को नि:शुल्क पढ़ाया जाता है ये सत्यसनातन वेद मन्दिर बच्चों को अच्छी क्वालिटी के लोवर बनवाकर वितरण किये गये। बच्चों को प्राणायाम व योग आसन सिखाकर स्वस्थ व प्रसन्न रहकर राष्ट्र को प्रसन्न व स्वस्थ बनाये तथा ध्यान मैडिटेशन के विषय की भी चर्चा की। इस अवसर पर अमेरिका से आये डा. सतीश प्रकाश, शारदा वर्मा ब्रजपाल आर्य, महेश आर्य, श्री नीरज आर्य जो गुरुकुल के संस्थापक है तथा अन्य लोगों ने भी भाग लिया और उन्होंने बच्चों के योग आसन के बहुत अच्छे अभ्यास देखे।

वेदमन्दिर समिति के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य **पंजाब के पटियाला जिला अन्तर्गत समाना स्थित पिंगल आश्रम** भी गए, जहाँ पर लगभग 350 नर-नारी बच्चे जो मानसिक रोगी है। जिन्हें देखकर कर्म योग चक्र का ज्ञान होता है। मनुष्य का शरीर पाकर भी किस दुर्दशा के रहना पड़ता है। वह ट्टटी-पेशाब, वही खाना-पीना चिल्लाना, हंसना, तोड़- फोड़कर यह हालत देखकर कर्मो के फल का ज्ञान होता है और जो माया के कार्य करने वाले, जो उनकी सेवा कार्य कर रहे है वे महान् कार्य कर रहे है। मैं तो इसी को सच्ची साधना कहता हूँ, इस प्रकार के अशक्त मानवों की सेवा को ही ईश्वर भक्ति कहता हूँ। इस अवसर पर वेदमन्दिर समिति के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी के फल वितरण किया तथा बच्चों के भोजन हेतु कुछ दान भी दिया।

ये सभी सेवा संस्कृति साधना के कार्यो को करते हुए समिति के सभी अधिकारियों को गर्व है यही हमारी सच्ची ईश्वर भक्ति है।

- मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने खरीदा नया प्रचार वाहन

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने नया प्रचार वाहन इको-कार्गो खरीदा, जिसे महाशय धर्मपाल जी ने अपने आशीर्वाद के साथ रवाना किया। यह प्रचार वाहन दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों में उनकी आवश्यकता एवं मांग अनुसार प्रचार सामग्री भेजी जाएगी।

नए प्रचार वाहन के साथ महाशय धर्मपाल जी, श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं एम.डी. एच. परिवार के सदस्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा निर्वाचन आचार्य विजयपाल जी पुन: प्रधान बने

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक (हरयाणा) का निर्वाचन दिनांक 26 दिसम्बर, 2013 को सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से आचार्य विजय पाल जी को पुन: प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इसी के साथ-साथ मास्टर रामपाल जी को मन्त्री तथा श्री कन्हैयालाल आर्य को कोषाध्यक्ष के रूप में निर्विरोध रूप से निर्वाचित घोषित किया गया। इसी अवसर पर शेष कार्यकारिणी एवं अन्तरंग सदस्यों का भी निर्वाचन किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नव निर्वाचित समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं।

।। ओ३म्।।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार

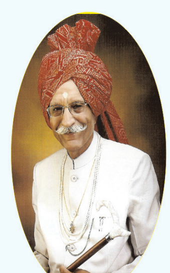

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें
गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

प्रमुख उत्पाद: गुरुकुल चाय, पायोकिल, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ट, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

पृष्ठ 4 का शेष

आर्यजनो ने बड़ी धनराशि सहयोग देने के आश्वासन दिए।

समारोह के मुख्य अतिथि महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि यह गुरुकुल महाविद्यालय आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित होता है किन्तु गुरुकुल की वर्तमान वस्था को देखकर मन दु:खी है। परमात्मा के आशीर्वाद से इसकी स्थिति को सुधारने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। उन्होंने घोषणा करते हुए कहा कि एम.डी.एच. की ओर से एक करोड़ रुपये की लागत से छात्रावास एवं विद्यालय का निर्माण किया जाएगा।

समारोह के अध्यक्ष एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश जी ने कहा कि हम सबको कन्या गुरुकुल महाविद्यालय के 90 वर्ष पुराने गौरवमयी इतिहास को लौटाने के लिए आर्यजनों को कमर कसनी होगी।

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने कहा कि लम्बे समय से कन्या गुरुकुल की भूमि पर इस प्रकार के आयोजन का इंतजार रहा , जो आज आपकी उपस्थिति से सम्भव हो सका है। हमें आशा है कि आपके सहयोग से गुरुकुल पुन: अपने स्वर्णिम अतीत को प्राप्त कर सकेगा।

आर्य विद्या सभा के कोषाध्यक्ष एवं दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा 11 लाख रुपये की लागत से लाला दीपचन्द आर्य की स्मृति में गौशाला का निर्माण किया जाएगा, जिससे कन्याओं के लिए दुग्धादि की समस्या न रहे।

मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल जी ने निर्माण की घोषणा करने के लिए महाशय धर्मपाल जी एवं श्री धर्मपाल आर्य जी का धन्यवाद करते हुए कहा कि कन्या गुरुकुल में पिछले 50 वर्ष से कोई निर्माण कार्य नहीं हो सका है, यह निर्माण की भी स्वर्ण जयन्ती होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य ने कहा कि दिल्ली की आर्यसमाजें अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए पूरी तरह तत्पर हैं। उन्होंने अपने माध्यम से कन्या गुरुकुल हेतु एक वर्ष का चावल (8000किलो) भी प्रदान कराने का आश्वासन दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने कहा कि कन्या गुरुकुल हमारा अपना गुरुकुल है इसके उत्थान के लिए हरियाणा प्रान्त पूरा योगदान करेगा किन्तु गुरुकुल डेढ़ करोड़ के घाटे में क्यों और कैसे पहुंचा इसकी जांच की जानी चाहिए।

गुरुकुल की आचार्या डॉ. सविता आनन्द जी ने कहा कि आर्यजनों के इस उत्साह को देखकर गुरुकुल परिवार में उत्साह की लहर हुई है। आशा है आर्य विद्या सभा एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नवीन पदाधिकारियों के निर्देशन में हमारा महाविद्यालय पुन: बुलन्दियों को छूएगा।

गुरुकुल के विकास से ही जुड़ा है आर्यमाज का विस्तार
आर्यजनता के सहयोग से ही होगा गुरुकुल का पुनरुद्धार

आर्य जनता से निवेदन है कि एक वर्ष का सहयोग करें तब तक हम गुरुकुल को आत्मनिर्भर बनाने का भरपूर प्रयत्न करेंगे

कन्या गुरुकुल देहरादून के पुनरुद्धार में सहयोगी बनें दिल खोलकर दान दें

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के पुनरुद्धार के लिए आपका सहयोग एवं सदभाव सादर अपेक्षित है। आप निम्न प्रकार अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। आप चाहें तो गेहूं, चावल, चीनी, तेल, घी, दालें भी दे सकते हैं।

1. एक दुधारु गाय	= 45 हजार रुपये
2. एक मास का सूखा राशन	= 65-70 हजार रुपये
3. एक का दूध व्यय	= 20 हजार रुपये
4. एक मास का सब्जी व्यय	= 20 हजार रुपये
5. पीने के पानी आर. ओ. सिस्टम	= 15-20 हजार रुपये
6. गायों के लिए चारा (एक दिन)	= 2500 रुपये

आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी के आह्वान परकन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के लिए दान देने वाले महानुभावों की सूची

1. महाशय धर्मपाल जी	एकमुश्त दस लाख रु.
महाशय धर्मपाल जी	1 लाख रुपये प्रतिमास (आठ माह तक)
2. श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्रीमती वीणा आर्या जी	11 लाख रुपये गौशाला निर्माण हेतु
3. श्री अशोक गुप्ता जी	समरसीबल पंप
4. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा	2 लाख 50 हजार रु.
5. आर्यसमाज कीर्ति नगर	एक गाय
6 श्री रमेश बंसल जी	एक गाय
7. आर्यसमाज पंजाबी बाग (पश्चिम)	1 माह का भोजन
8. आर्यसमाज जनकपुरी पंखा रोड	एक गाय
9. आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई	1 माह का भोजन
10. श्री प्रेम अरोड़ा जी	एक गाय
11. श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता जी	11000 रु.
12. श्रीमती उषाकिरण आर्य (आर्यसमाज विवेक विहार)	15 दिन का भोजन
13. श्री सुभाष चन्द्र चान्दना जी (आर्यसमाज मालवीय नगर)	5100 रु.
14. श्रीमती पुष्पा आहुजा जी (आर्यसमाज विवेक विहार)	11000 रु.
15. आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर जी	11000 रु.
16. गुरुकुल रानी बाग	एक माह का भोजन
17. श्री रणवीर दुआ जी	11000 रु.
18. डॉ. संगीता आचार्या जी	21000 रु.
19. श्री उमाशंकर सैनी जी (शिलोखरा गुडगांव)	11000 रु.
20. श्री तेजवीर जी, जैनपार्क उत्तमनगर	11000 रु.
21. हरिद्वार कन्या गुरुकुल परिसर	एक माह का भोजन
22. श्री सुरेन्द्र गुप्ता एवं सुधा गुप्ता जी	एक माह का भोजन
23. श्रीमती सुशीला गोयल जी (महरौली)	15 दिन का भोजन
24. माता आशा गुप्ता जी (आर्यसमाज प्रशांत विहार)	5100 रु.
25. श्री वेदप्रकाश अग्रवाल जी	एक आर ओ सिस्टम
26. श्रीमती वीना सरावगी एवं श्री अशोक सरावगी	11000 रु.
27. श्री दिलीप कुमार दिनकर जी	500 रु.
28. दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल के माध्यम से	50000 रु.
29. श्रीहजारीलाल आर्य जी (आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड)	51000 रु.
30. श्री अशोक कुमार राजदान एवं रंजना राजदान (देहरादून)	200000 रु.
31. राजसिंह आर्य जी (प्रधान दि.आ.प्र.सभा)माध्यम से	एक वर्ष का चावल
32. आर्यसमाज ए-ब्लॉक जनकपुरी	एक गाय
33. श्री कीर्ति शर्मा जी (करोल बाग)	एक गाय
34. श्री धर्मदेव खुराना जी (प्रशान्त विहार)	एक गाय
35. महाशय श्रद्धानन्द जी	21000 रु.
36. श्री बृजेश आर्य जी	1100 रु.

आर्य जनता से निवेदन है कि दिल खोलकर दान दें ताकि हम सब मिलकर गुरुकुल को आत्मनिर्भर बना सकें।

यदि आप अपनी दानराशि पर **आयकर छूट** चाहते हैं तो कृपया दानराशि **'सहायक मुख्याधिष्ठता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार'** के नाम भेजें। कृपया चैक के पीछे 'कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून' हेतु सहयोग अवश्य लिखें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरिनगर नई दिल्ली में

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम् का उद्घाटन

रविवार 19 जनवरी, 2014 समय: प्रात: 10 बजे

संस्कृत, संस्कृति एवं संस्कार के उन्नयन के लिए संकल्पबद्ध इस संस्थान की स्थापना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरिनगर नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग प्रयास से की जा रही है। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर गुरु विरजानन्द जी को समर्पित इस संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र के उद्घाटन के साक्षी बनें

अभिभावक इस संस्कृतकुलम् में अपने बच्चों को पूर्ण संस्कृत पढ़ाने के लिए तत्काल सम्पर्क करें

-: निवेदक : -

ब्र. राजसिंह आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य (प्रधान)
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

वीरेन्द्र मल्होत्रा (प्रधान) महेन्द्र सिंह आर्य (मन्त्री)
आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक, हरि नगर

प्रिं० चित्रा नाकरा "एक्सप्रेशन इण्डिया" द्वारा सम्मानित

शिक्षा, समाज सेवा, कला एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्द्धन में विशेष योगदान प्रदान करने के कारण आर्य समाज की प्रधाना एवं वेदव्यास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल विकासपुरी की प्रधानाचार्या श्रीमती चित्रा नाकरा जी को "एक्सप्रेशन इण्डिया" नामक प्रख्यात संस्था ने 'नेशनल साईंस सेन्टर नई दिल्ली' में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया, इस अवसर पर देश के जाने-माने शिक्षाविद, प्रख्यात् दार्शनिक, वैज्ञानिक, समाज-सेवी तथा अनेकों छात्र उपस्थित थे।

'एक्सप्रेशन इण्डिया' के अध्यक्ष एवं अन्य प्रबुद्ध जनों ने प्रिं0 चित्रा नाकरा जी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर प्रिं0 नाकरा ने कहा- ''यह सम्मान आर्य समाज के दिव्य विचारों तथा गौरवशाली डी0ए0वी0 संस्था के प्रेरणाप्रद संस्कारों एवं प्रोत्साहन का ही परिणाम है, जो हमें हमेशा आगे बढ़ने का साहस और कुछ नया कर गुजरने का हौसला देता है।'' *- नीरज ज्योति, उप प्रधान*

आर्यसमाज पुष्पांजलि एंक्लेव का २७वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, पुष्पांजलि एंक्लेव, पीतम पुरा, दिल्ली-३४ का २७वाँ वार्षिकोत्सव ५ से ८ दिसम्बर,२०१३ तक सोल्लास मनाया गया। १दिसम्बर को प्रातः ६ से ८ बजे तक प्रभातफेरी निकाली गई। ५ दिसम्बर को प्रातः यज्ञ के पश्चात् प्रसिद्ध समाजसेवी श्री जवाहर लूथरा जी ने ओ३म् ध्वजारोहण किया। ७ दिसम्बर सांय ७.३० बजे आचार्य अमृता जी के भजन एवं ८.३० बजे आचार्य अर्जुनदेव वर्णी द्वारा वेद कथा हुई। आचार्य जी ने प्रतिदिन एक घंटे का समय शंका समाधान के लिये नियत किया और स्वामी दयानन्दकृ त ग्रंथों से ही शंका समाधान किया। ८ दिसम्बर को समापन के अवसर पर प्रो0 महेश विद्यालंकार जी ने वेदों के संदेश, उपदेश और आदेशों पर चलने का आह्वान किया। उ.पश्चिमी वेद प्रचार मंडल से श्री जोगेन्दर खट्टर जी ने सदस्यों की संख्या बढ़ाने की सलाह दी। इस अवसर पर दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं उ. प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के प्रधान सुरेन्द्र आर्य जी ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। *- वेदव्रत कश्यप, प्रधान*

शोक समाचार — महात्मा महेन्द्र सिंह आर्य का निधन

कन्या गुरुकुल डोभी(हिसार) के संस्थापक व कुलपति महात्मा महेन्द्र सिंह आर्य का दिनांक ३.१२.२०१३ को निधन हो गया है। वे काफी समय से कैंसर के रोग से पीड़ित थे। उनकी आयु ६५ वर्ष की थी। वे अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती भूलांदेवी, पुत्र बलजीत आर्य, दलजीत आर्य, परमजीत शास्त्री,कर्मजीत आर्य का भरापूरा परिवार छोड गये हैं।

श्रीमती कैलाश सिंघल का निधन

आर्या माता श्रीमती कैलाश सिंघल जी, धर्मपत्नी श्री जितेन्द्र मोहन सिंघल जी का अल्पकालीन रुग्णता के पश्चात् 29 दिसंबर 2013 को 74 वर्ष की अवस्था में देहांत हो गया। एक दिन पूर्व ही उनके ज्येष्ठ सुपुत्र अरविन्द सिंघलजी आपके पास पहुँचे थे ।

आदरणीया माताजी भिवानी, हरियाणा के आर्यपुरुष श्री ज्ञानीराम कसेरा की सुपुत्री एवं झज्जर के प्रसिद्ध समाजसेवी लाला परशुरामजी "आर्यसेवक" की ज्येष्ठ पुत्रवधू थीं । वे अपने पीछे 2 पुत्र एवं 2 पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं, जो अमेरिका एवं कनाडा में रहते हैं।

माताजी अति मिलनसार, प्रभु-भक्त, साहसी एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति आजीवन समर्पित रहीं। सभी संतानों को अनेक देशों में रहते हुए भी वैदिक धर्म के संस्कारों से पोषित किया। आप वर्तमान में आर्यसमाज प्रशान्त विहार की सदस्या रहीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339 (श्री विजय आर्य)

आर्यसमाज जनकपुरी सी-3 में आर्य वीरांगना दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में आर्य वीरांगना दिवस 15 दिसम्बर, 2013 को मनाया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत वीरांगनाओं ने ईशगान, राष्ट्रगान, शान्तिगीत, मन्त्रपाठ, राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं पर कवितापाठ प्रस्तुत किए। ये वीरांगनाएं आत्मविश्वास से भरपूर हैं और हवन संध्या आदि कराने में भी सक्षम हैं। ये वीरांगनाएं आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग व प्रादेशिक कार्यक्रमों में भी सक्रियता से भाग लेती हैं। आने वाले समय में ये वीरांगनाएं एक अच्छी बनेंगी मानव ऐसी आशा है। इस अवसर पर समस्त वीरांगनाओं को आशीर्वाद के साथ-साथ नैतिकता एवं संस्कारों को ग्रहण करने की प्रेरणा दी गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. प्रबन्धक (मीडिया): आर्यसमाज के कार्यक्रमों को टी.वी. पर प्रसारित करा सकें
2. प्रबन्धक (लीगल): जो सभा के सम्पत्ति एवं कोर्ट सम्बन्धी कार्यों को कर सके।
3. उपदेशक/प्रचारक/भजनोपदेशक : जो सभा के वेद प्रचार विभाग/प्रचार वाहन पर कार्य कर सकें।
5. सेल्समैन: जो विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक साहित्य के आर्डर ला सके/विक्रय कर सके तथा पुस्तक मेलों में भी जाकर साहित्य प्रचार कार्य को सम्पन्न कर सके।
6. हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक : जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें। **7. एकाउंटेंट**

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज आदर्श नगर, दिल्ली का

56वां वार्षिकोत्सव

गायत्री महायज्ञ एवं दिव्यज्ञान सत्संग
30 दिसम्बर से 5 जनवरी, 2014
यज्ञ : प्रातः 7 से 9 बजे
ब्रह्मा/प्रवचन : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय
भजन : पं. सहदेव बेधड़क
महिला सम्मेलन : 2 जनवरी
पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
5 जनवरी, 2014 प्रातः 7:30 से 1 बजे
- राम प्रकाश छाबड़ा, प्रधान

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लगन एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश निर्वाचन सम्पन्न
श्री प्रबोधचन्द्र सूद प्रधान चुने गए

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 8 दिसम्बर, 2013 को आर्यसमाज हमीरपुर में कर्नल चेतराम चौहान जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से प्रधान के रूप में श्री प्रबोधचन्द्र सूद (काण्डाघाट), महामन्त्री- श्री रामफल सिंह आर्य (सुन्दर नगर) एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री नरेश कम्बोज (सुन्दर नगर) को निर्वाचित घोषित किया गया। शेष कार्यकारिणी के गठन का अधिकार सर्वसम्मति नव निर्वाचित प्रधान श्री प्रबोधचन्द्र सूद को प्रदान किया गया। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नव निर्वाचित समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैंडी 500 ग्राम	160/-	8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
2. च्वयनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 30 दिसम्बर, 2013 से रविवार 5 जनवरी, 2014
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2/3 जनवरी, 2014
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 जनवरी, 2014

विश्वव्यापी आर्य समाज के समाचार

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

सामाजिक, धार्मिक व समसामयिक गतिविधियों का दर्पण

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

आप तक पहुंचाता है, देश-विदेश सहित दिल्ली एवं आसपास की आर्य संस्थाओं की अनेक जानकारियां। आप पढ़ें, इष्टमित्रों को भी पढ़ाएं और सदस्य बनें और बनाएं।

वार्षिक सदस्यता : 250/-   आजीवन सदस्यता 1000/-

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी-किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/- रुपये प्रति शीट।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

कैलेण्डर वर्ष 2014

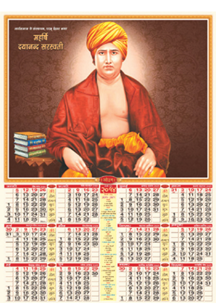

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, 23365959; 09540040339

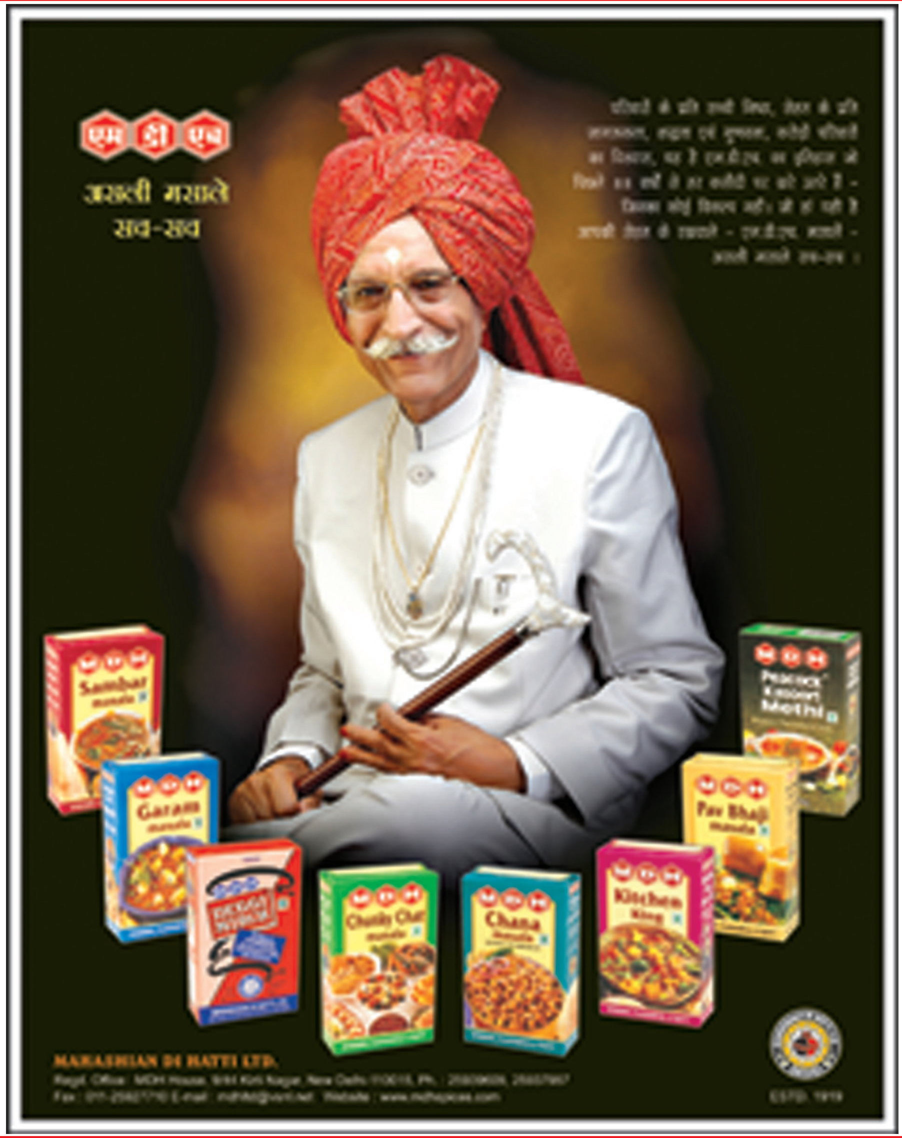

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर